International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 7, Issue 06, June 2020
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

बाँसुरी वादन के क्षेत्र में दुर्लभ महिला कलाकारा

– **प्रतिभा चौधरी**
शोधार्थी
संगीत विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महिला और पुरूष की बराबर की भागीदारी रही है। किन्तु भारतीय समाज की सोच सदैव पुरूष प्रधान ही रही। लेकिन वर्तमान युग की नारी को पुरूषों से कहीं भी कम नहीं आंका जा सकता। घर की चार दीवारी से लेकर सीमा की प्रहरी तक महिलाओं की उपस्थिति देखी जा सकती है। भारतीय संगीत का क्षेत्र भी महिलाओं से अछुता नहीं रहा है। प्राचीन काल से ही भारतीय संगीत के क्षेत्र में संगीत का फिर चाहे क्रियात्मक पक्ष हो या शास्त्रात्मक पक्ष दोनों ही पक्षों में महिलाओं ने अपनी महती भूमिका निभाई है।

भारतीय संगीत के कुछ क्षेत्रों पर सदैव पुरूषों का ही वर्चस्व रहा है। उन क्षेत्रों में अगर महिलाओं की उपस्थिति रही भी है तो अत्यन्त अल्प संख्या में रही है। पौरूषीय वर्चस्व क्षेत्रों में महिलाऐं है तो भी उनकी संख्या इतनी कम है की उनकी गिनती अँगुलियों पर की जा सकती है। भारतीय संगीत वाद्य वादन में कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिनको साधना महिला के लिये अत्यन्त दुष्कर, कठिन एवं श्रमसाध्य माना जाता है। अगर उन क्षेत्रों में पर्दापण करने का साहस भी करना चाहे तो समाज की यह

© **Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

धारणा "महिला है नहीं कर पाएगी" आड़े आ जाती है। इन सभी बाधाओं एवं तमाम चुनौतियों के बावजूद महिलाओं ने संगीत के पौरूषीय वर्चस्व वाले क्षेत्रों में पर्दापण ही नहीं किया वरन् स्वयं को एक उत्कृष्ठ कलाकारा के रूप में स्थापित भी किया है।

पौरूषीय वर्चस्व माने जाने वाले क्षेत्रों में से एक क्षेत्र है बाँसुरी वादन। बाँसुरी वादन क्षेत्र पर सदैव पुरूषों का ही एकाधिकार रहा है। वैदिक काल की नारियाँ गायन, वादन एवं नृत्य तीनों कलाओं में पारांगत होती थी। अगर हम प्राचीन ग्रन्थों एवं उपनिषदों को उठाकर देखें तो वैदिक काल में यज्ञ आदि अवसरों पर नारी के द्वारा वीणा वादन करने के प्रमाण हमें प्राप्त होते है। वंशी वादन भी महिला द्वारा किया जाता था इसका संकेत हमें अजन्ता की गुफाओं में चित्रित वंशीवादन करती हुई नारी के चित्र को देखकर ज्ञात होता है। मध्यकाल में दरबारों में संगीतज्ञ नारियों के द्वारा गायन वादन एवं नृत्य करने प्रमाण हमें कई किताबों में प्राप्त होते हैं लेकिन महिला द्वारा वंशीवादन करने के प्रमाण नहीं प्राप्त होते।

अगर वर्तमान काल के परिपेक्ष्य में चर्चा करे तो बाँसुरी वादिकाओं की संख्या इतनी कम है कि उन्हें अँगुलियों पर गिना जा सकता है। बाँसुरी वादन के क्षेत्र में महिला वादिकाओं की अल्प संख्या होने का कारण बाँसुरी वादन की दुरूहता है। विविध प्रकार के वाद्यों में से मुख द्वारा वायुपुरणजनित सुषिर वाद्यों की साधना अत्यन्त कठिन होती है क्योंकि सुषिर वाद्यों के वादन के लिये अधिक दम और मजबूत फेफड़ों की आवश्यकता होती है।

बाँसुरी वादन हेतु श्वासों पर अत्यधिक अधिकार होना आवश्यक है जिससे कि बाँसुरी से स्वर उत्पन्न करते हुए श्वास की कमी ना रहे और स्वर में कनसुरापन या

बेसुरापन ना आ पाए। एक बार में अधिक से अधिक लम्बी श्वास लेनी होती है जिससे एक स्वर पर अधिक ठहराव करने में एवं लम्बी तानों में श्वास की कमी ना रहे। बाँसुरी वादन करते समय होठों की आकृति को बाँसुरी के छेद के अनुसार छोटा या बड़ा किया जाता है जिससे श्वास का सही प्रकार से पूर्ण उपयोग किया जा सके। बाँसुरी में स्वर उत्पन्न करने में जिह्वा का बड़ा ही महत्वपूर्ण उपयोग होता है। जिह्वा में लोच का होना भी आवश्यक होता है। बाँसुरी वादन करना चेहरे के लिये बहुत ही परिश्रमपूर्ण होता है क्योंकि वादन के दौरान लगातार होठों को 'ओ' की आकृति में रखना होता है जिससे चेहरे के कपोलों में तनाव आना प्रारम्भ हो जाता है। बाँसुरी वादन में श्वास का सन्तुलन भी आवश्यक होता है। बाँसुरी से स्वर की उत्पत्ति वायु के संतुलित रूप से देने पर ही होती है। बाँसुरी वादन के दौरान हाथों को भी एक विशेष स्थिति में रखना होता है कई घंटों तक। जिससे हाथों में दर्द होने लग जाता है।

लघु आकार की बाँसुरी वादन तो महिला के लिये फिर भी कुछ सरल होता है परन्तु दीर्घ आकार की बाँसुरी का वादन कोमल चितवृत्ति वाली कोमलांगी महिला के लिये साधना अत्यन्त दुष्कर एवं श्रम साध्यपूर्ण होता है। जब इन सभी पक्षों पर विचार करे तो यही निष्कर्ष निकलेगा कि महिला के लिये बाँसुरी वादन करना सरल नहीं होता।

बाँसुरी वादन में विभिन्न समस्याओं और वादन के कठिन पक्ष होने के बावजूद भी महिलाओं ने बाँसुरी वादन के क्षेत्र में पर्दापण ही नहीं किया वरन् इस क्षेत्र में स्वयं को उत्कृष्ट कलाकारा के रूप स्थापित भी किया। वर्तमान में ऐसी ही दुर्लभ

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)

बाँसुरी वादिकाऐं है सुचिस्मिता एवं देवोप्रिया जिन्हें ″Flute Sister″ के नाम से भी जाना जाता है। आप दोनों बहनों का जन्म एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ। आपके माता एवं पिता दोनों ही हिन्दुस्तानी गायक थे। आपके पिताजी की विशेष इच्छा थी कि आप दोनों बाँसुरी वादन को अपना कार्य क्षेत्र चुने। आप दोनों बहनों ने बाँसुरी वादन के क्षेत्र को सहर्ष चुनकर अपने पिता की इच्छा को पूर्ण कर दिया। आप दोनों बहनों की बाँसुरी वादन की प्रारम्भिक शिक्षा प्रसिद्ध बाँसुरी वादक भोलानाथ प्रसन्ना जी से आरम्भ हुई। भोलानाथ प्रसन्ना जी से बाँसुरी वादन की शिक्षा पूर्ण करने के बाद आप दोनों ने प्रख्यात बाँसुरी वादक हरिप्रसाद चौरसिया जी के सानिध्य में रहकर बाँसुरी वादन की बारिकियों और पेचीदगियों को सिखा। बाँसुरी वादन के लिये आप दोनों ही बहनों को अनेकों छात्रवृत्तियों प्राप्त हुई है। बाँसुरी वादन के क्षेत्र में महिलाओं के ना होने का कारण सुचिस्मिता जी यही बताती है कि ″महिलाएं यही सोचती हैं कि यह वाद्य यंत्र महिलाओं के लिये नहीं है इसलिये इस क्षेत्र में आगे आने का साहस नहीं जुटा पाती। हम दोनों बहनों ने जब बाँसुरी वादन की शुरूआत की तब हमारी इस वाद्य यंत्र को बजाने वाली कोई भी महिला रोल मॉडल नहीं थी। जिसे देखकर हम प्रोत्साहित हो सकें।

देवोप्रिया जी का भी इस विषय पर यही कहना है कि ″बाँसुरी वादन सरल नहीं होता। यदि आप लगातार कई घंटो तक बाँसुरी वादन करते है तो आपके फेफड़ों की पूरी शक्ति खर्च हो जाती है।″

आप दोनों बहने बाँसुरी वादन की युगल प्रस्तुतियाँ देती है इसमें आप दोनों एक–दूसरे को बाँसुरी वादन में एक–दूसरे का पूरक मानती हैं।

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)

आप दोनों ने देश–विदेश में कई स्थानों पर बाँसुरी वादन की युगल प्रस्तुतियाँ दी है। जिन्हें संगीत गुणीजनों एवं संगीत रसिकों द्वारा मुक्त कंठ से सराहा गया है। आप दोनों बहनों ने टेलीविजन के कार्यक्रमों में पृष्ठभूमि संगीत भी प्रदान किया है जैसे– बालिका वधु, अफसर बिटिया आदि।

आप दोनों के युगल बाँसुरी वादन की सी.डी. भी रिलीज हुई है। दोनों बहनों को बाँसुरी वादन के लिये कई पुरस्कारों एवं सम्मानों से भी सम्मानित किया जा चुका है। आप दोनों बहने भावी महिला युवा पीढ़ी के लिये बाँसुरी वादन के क्षेत्र में प्रेरणास्रोत के रूप में उभर रही है जिससे महिलाऐं इस क्षेत्र में आगे आने का साहस जुटा पाएंगी।

सन्दर्भ :

1. भारतीय संगीत का इतिहास–उमेश जोशी, 1969, मानसरोवर प्रकाशन प्रतिष्ठान, फिरोजाबाद।
2. भारतीय संगीत का इतिहास–भगवतशरण शर्मा, 1993, संगीत कार्यालय हाथरस (संगीत प्रेस, हाथरस)
3. भारतीय संगीत का एक ऐतिहासिक विश्लेषण–स्वतंत्र शर्मा, 1988, लेटर टाईप सेटिंग 341/22, शास्त्री नगर, मीरपुर, इलाहाबाद।
4. देवोप्रिया जी एवं सुचिस्मिता जी का साक्षात्कार मेरे द्वारा 9 अगस्त 2017 को जयपुर में।